साखियाँ एवं सबद

साखियाँ एवं सबद का सार / प्रतिपाद्य

कबीरदास जी प्रस्तुत साखियाँ एवं सबद के द्वारा मनुष्य को विभिन्न प्रकार की सीख देते हैं। साखियों में कबीरदासजी मनुष्य को सच्ची भक्ति करने के लिए, प्रेम तथा ज्ञान के महत्व को समझने, धर्म के नाम पर होने वाले विवाद से दूर रहने और सच्चा कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं।

पहले सबद में वे मनुष्य को ईश्वर का सच्चा स्वरूप समझाने का प्रयास करते हैं। उनके अनुसार ईश्वर मंदिर-मस्जिद में नहीं बल्कि हमारी प्रत्येक साँस में विद्यमान है। अतः उसे ढूँढने के लिए हमें स्वयं में झाँकना पड़ेगा।

दूसरे सबद में वे ज्ञान के महत्व का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार ज्ञान के जीवन में आने से सारे मोह-बंधन छूट जाते हैं। मनुष्य के आगे से माया का परदा हट जाता है और उसे सही मार्ग दिख जाता है।

साखियाँ एवं सबद का भाव

- सभी साखियों का भाव इस प्रकार हैः
  1. हृदय रूपी मानसरोवर सारे साधकों का प्रिय स्थान है।
  2. ईश्वर से मिलने के बाद सारा दुख समाप्त हो जाता है।
  3. ज्ञान के मार्ग पर मनुष्य को दृढ़-निश्चयी होकर बढ़ना चाहिए।
  4. जो साधक वाद-विवाद से दूर रहता है, वही संत कहलाता है।
  5. हमें धर्म के नाम पर नहीं लड़ना चाहिए। ईश्वर एक है।
  6. साधू का संबंध कुल से नहीं ज्ञान से है।
- पहले सबद के अनुसार ईश्वर हमारे अंदर विद्यमान है। अतः उसे बाहर ढूँढ़ने के स्थान पर अंदर ढूँढ़े।
- दूसरे सबद के अनुसार ज्ञान के आते ही सारे संशय, मोहमाया, दुख इत्यादि समाप्त हो जाते हैं।

भाषा शैली की विशेषताएँ

- सरल भाषा
- प्रवाहमयी भाषा
- सुधक्कड़ी भाषा
- छंदों का प्रयोग
- प्रतीकात्मकता का प्रयोग
- अलंकारों का सुंदर प्रयोग
- गेयता का गुण विद्यमान

साखियाँ एवं सबद का उद्देश्य

- मनुष्य को ज्ञान का उपदेश देना।
- मनुष्य को भक्ति का महत्व समझना।
- मनुष्यों को ईश्वर का स्वरूप समझना।
- समाज में समानता का भाव पैदा करना।
- मनुष्य में धर्म के नाम पर होने वाले झगड़ों को दूर करना।

<u>साखियाँ एवं सबद से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा</u>

- यह पाठ हमें सच्ची भक्ति करने, ज्ञान को जानने और भक्ति से आडंबरों को दूर करने की सीख देता है।